Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 12 | Sept. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.org

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता और शब्द–चयन

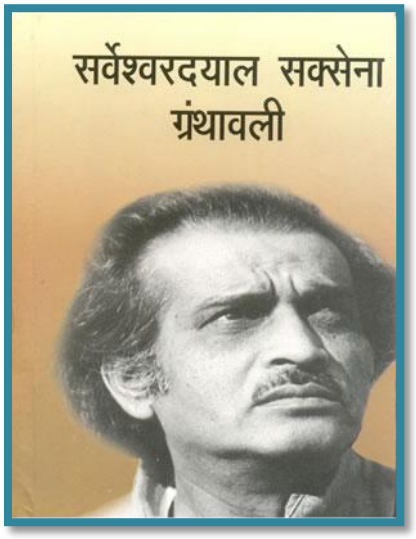

दिनेश चंद्र

शोध–छात्र , हिन्दी विभाग पंजाब,वि०वि० चंडीगढ़

सारांश:-

रचना के संपूर्ण कथ्य का संप्रेषण शब्दों द्वारा होता है। शब्दों के आधार पर रचना के संपूर्ण कथ्य का विश्लेषण किया जा सकता है। कवि अपनी कुशलता से काव्य–रचना–प्रक्रिया के दौरान शब्दों का चयन करता है। कवि द्वारा चयनित शब्द ही होते हैं जो कई बार सामान्य होते हुए भी विशेष व्यंजना करते हैं। कवि सामान्य शब्दों की ऐसी व्यवस्था या संयोजन करता है कि वे विशिष्ट अभिव्यक्ति देने में सक्षम हो जाते हैं।

प्रस्तावना :-

सामान्यभाषा और काव्यभाषा दोनों में शब्दों का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'सामान्य बोलचाल में भी सटीक एवं प्रभावी अभिव्यक्ति हेतु हम चयन करके शब्दों का प्रयोग करते है। काव्यभाषा जिसकी इकाई शब्द है, में शब्द–चयन का विशेष स्थान है सामान्य रूप से शब्द–चयन स्वयं में कवि के लिए महत्वपूर्ण कार्य है। कवियों को आँख मूँदकर शब्दों को ग्रहण नहीं करना चाहिए। उन्हें आवश्यकतानुसार किसी शब्द का परित्याग और किसी का ग्रहण करना चाहिए। शब्द–चयन सामान्य और सुष्ठु होना चाहिए। अच्छा कवि वह हे जिसे

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 12 | Sept. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.org

ठीक उस शब्द को चुन लेने की क्षमता हो जिसकी उसे आवश्यकता है। वामन का शब्द पाक सिद्धांत भी सटीक शब्द-चयन की महत्ता घोषित करता है।'[1]

कवि काव्यरचना हेतु वैयक्तिक भाषा का निर्माण करता है, इस क्रम में उसे भाषा से संघर्ष करना पड़ता है। वह बहुत ही सजग होकर शब्दों का प्रयोग करता है। कई बार उपलब्ध शब्दों से विवक्षा की पूर्ण अभिव्यक्ति न होता देख नए शब्द का सर्जन भी करता है। वह एकमात्रता की कसौटी अपनाता है और जब तक पूर्णोपयुक्त शब्द प्राप्त नहीं होता वह संतुष्ट नहीं होता कवि भाषा का स्रप्टा कहलाता है। काव्य में भावोदबोधक नव-नव शब्दों के प्रयोग के कारण वह भाषा का प्रचारक भी है। भिव्यक्ति के लिए न तो समस्त और न समासयुक्त भाषा की न तो कठिन भाषा की और न सालंकार भाषा की आवश्यक्ता है। हाँ हमारे शब्द शक्तिशाली अवश्य हो जो भावों को हृदयंगम करा सके और अपना प्रभाव डाल सके। [2]

काव्यरचना प्रक्रिया के दौरान कवि पर्यायों के प्रति सजग रहता है पर्याय शब्दों का भी अलग-अलग निश्चित अर्थ होता है। सामान्य-जन पर्यायों का बिना खास विचार किये बेधड़क प्रयोग करता है लेकिन कवि कामचलाऊ बातचीत (वार्त्ता) नहीं करता उसे तो अपने भाव की सटीक अभिव्यक्ति उसी मात्रा में करनी अभीष्ट होती है जिस मात्रा में वह उसके अंतर्मनि में उदित कुआ हैं। कवि अनुभव करता है कि कामचलाऊ शब्दों से या तो अर्थ उस मात्रा में नहीं अभिव्यक्त होता है या कुछ भिन्न अर्थ अभिव्यक्त होता है। इसी सटीक शब्द की खोज में संघर्षशील रहता है जब तक समीचीन शब्द नहीं प्राप्त होता है; और ऐसा होते ही लगता है कि कोई और शब्द उपयुक्त नहीं कवि की सुवर्ण योजना काव्य एवं काव्यभाषा दोनों को मधुर कांत कोमल और रसपूर्ण बना देती है जिससे काव्यभाषा में रागात्मक, स्वाभाविक नाद सौन्दर्य भी उत्पन्न हो जाता है। उक्ति चमत्कारिक प्रभविष्णु और रमणीय बन जाती है। (यहाँ पर स्मरण रखना चाहिए कि वाणी सिद्ध कवियों के समुख अनायास ही भाषा अपने नानारूपों में प्रकट होती है।) तथापि पूर्व कथनानुसार इतना तो सत्य है कि कवि शब्दों के अद्‌भुत पारखी होते है और वे रचनाकाल में शब्द प्रयोग की उपयुक्त एवं प्रसंगानुकूल शब्दस्थापन की उस विधि का अनुसरण करते हैं जो कि उक्तरचना में भावाभिव्यक्ति सफल बनाती है। इस प्रकार कविता के शब्द सुविचारित होते है। जिनका चयन अंतिम होता है उन्हे बदल देने से कविता वह कविता नहीं रहती जो सटीक शब्द के साथ थी।

उपर्युक्त मानदण्डों के आधार पर सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं पर विचार करते समय हम पाते हैं कि प्रयुक्त शब्द एकदम सटीक है। उन्हें बिलकुल बदला नहीं जा सकता वे ही अर्थ गांभीर्य के एकमात्र वाहक है; विवक्षित अर्थ मात्र उनसे प्राप्त होता है। किसी और से भिन्न अर्थ (भख), या कम मात्रा में आता है, सर्वेश्वर ने सटीक शब्द प्रयोग किए हैं। उन्होने लोकबोली के शब्द भी पर्याप्त प्रयोग किए है लोकबोली के शब्दों को सर्वेश्वर ने नया अर्थ संस्कार किया है:

मेघ आए बड़े बन-ठन सँवर के
आगे-आगे नाचती गाती बयार चली

[1] डॉ० सियाराम तिवारी, कव्यभाषा, दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, प्रथम संस्करण, सन् 1976, पृष्ठ-55

[2] पं रामदहिन मिश्र, काव्य में अप्रस्तुत योजना, ग्रंथमाला कललिय, बाँकीपुर, पटना प्रथम संस्करण संवत 2005 पृष्ठ-25

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 12 | Sept. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.org

दरवाजे खिड़कियाँ खुलने लगी गली-गली
पाहुन ज्यो आए हो
गाँव में शहर के
मेघ आए बड़े बन ठन सँवर के
बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की बरस बाद सुधि लीन्ही।[3]

प्रस्तुत काव्यांश में सर्वेश्वर द्वारा प्रयुक्त 'दामाद' का बोधक 'पाहुन' 'बयार' (शीतल हवा) 'सुधि' (याद) 'बन-ठन' (बड़ेही सलीके से) शब्दों का बड़ा ही सटीक प्रयोग किया है। मेघ को गाँव की ससुराल में आए शहरी दमाद जिसकी उत्सुकता ससुराल वालों में ही नहीं अपितु पुरे गॉव में होती है; सभी उसे निहारना चाहते हैं; की तरह प्रस्तुत किया गया है क्यों कि शहर की जीवनशैली और ग्रामीण जीवनशैली में अंतर पाया जाता है। शहर चमक दमक फैशन के लिए जाना जाता है। ग्रामीण लोगों में शहर का आमतौर पर एक खास आकर्षण होता है। सर्वेश्वर का पाहुन भी शहरी है। यहाँ तक कि शहरी उत्पादों के प्रति भी ग्रामीणों के मन में एक आकर्षण होता है। भले ही वे गाँव की बाजार में क्यों न उपलब्ध हो, कविता में प्रयुक्त 'सुधि' शब्द आत्मीयता अपनेपन का भाव लिए हुए है। जिसमें उपालंभ है तो अपनेपन से चोट नहीं है। 'बयार' शब्द ठंडी हल्की हवा का भाव समेटे है पाहुन आया है तो हल्की ठंडी हवा भी स्वागत को चल पड़ी है। बयार ही इस दशा के लिए उपयुक्त शब्द है। अन्य नहीं। बन-ठन के शब्द द्वारा सर्वेश्वर मेघ की सुंदरता की बात करते है। बन-ठन से नाद सौन्दर्य की भी सृष्टि हो रही है। बादल (पाहुन) पूरी तैयारी के साथ आये है। कोई कोर-कसर नहीं बाकी है। अगर इन्ही शब्दों की जगह क्रमशः पाहुन की जगह (दामाद-जमाता) बयार की जगह (वायु-पवन-हवा) सुधि की जगह याद-स्मृति बन-ठन की जगह (सज-धज, सज सॅवर-तैयार) शब्द प्रयुक्त कर दिये जाए जो लगभग इनके पर्याय ही है तो भी वह भव और उसकी अभिव्यक्ति कभी नहीं हो पाएगी। कम से कम उस मात्र में तो बिल्कुल नहीं जिस मात्र में कविता में प्रयुक्त शब्दों द्वारा हो रही हैं इस प्रकार यह शब्द चयन सर्वोत्तम है, यही कविता है।

सर्वेश्वर जी आमजनता की सिधाई और राजनेताओं की पैतरेबाजी और आमजन की प्रतिक्रिया स्वरूप असफलता का चित्रण बड़े ही सटीक शब्दों द्वारा किया गया है:

मै जानता हूँ मेरे दोस्त
हमारा तुम्हारा और सबका गुस्सा
जंगली सुअर की तरह तेजी से
सीधे दौड़ता हुआ निकल जाएगा
और उस शिकार का कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा
जो पैतरा बदल लेता है। [4]

[3] सर्वेश्वर दयाल सक्सेना: कविताएं एक संग्रह-बाँस का पुल कविता मेघ आए राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नेता जा सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1978पृष्ठ-227

[4] सर्वेश्वर दयाल सक्सेना; गर्म हवाएँ; कविता पंचधातु राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली-110002 प्रथम संस्करण 771 600-21

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 12 | Sept. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.org

उपर्युक्त पंक्तियों में जंगली सुअर शब्द द्वारा सीधी-साधी जनता की दशा और उसकी असफल प्रतिक्रिया तत्पश्चात विस्मृति, शिकार शब्द द्वारा नेताओं के चरित्र की अभिव्यक्ति की है जो पैतरे बदलने में माहिर हैं, अक्सरवादी होते है सीधी सरल जनता इनका शोषण झेलती रहती है। आम-जन न तो पैतरे जानता है न पैतरों का तोड़ जानता है धीरे-धीरे वह अपनी नियति मान लेता है और भूलकर शांत हो जाता है। व्यवस्था के प्रति आक्रोश स्थायी न होकर क्षणिक हे सबका मन ही हार चुका है। आम जनता घुटने टेक चुकी है उसे कभी-कभार क्रोध आता है। इन पैतरे बाजों के आगे वह अपनी प्रतिक्रिया को सही दिशा नहीं दे पाता और शांत हो जाता है।

और तुम्हारी लाठी
उसी को टेककर चल रही है
एक बिगड़ी दिमाग डगमगाती सत्ता!
और तुम्हारा चश्मा?
इतने दिनों हर कोई
उसे ही लगाकर
दिखाता रहा है अंधो को करिश्मा!
तुम्हारी चप्पल?
गरीबी की चाँद गंजी
करने के काम आ रही है।
और घड़ी?
देश की नब्ज की तरह बंद है।[5]

प्रस्तुत पंक्ति में गांधी के बाद गांधीवादी सिद्धांतो का जो हश्र हुआ और राजनेताओ द्वारा उनके प्रतिमानों के अलग मायने बनाए गए, उन दशाओं का बड़ा सटीक वर्णन सर्वेश्वर ने किया है गांधी जी के बाद उनके सिद्धांत जनता को धोख में रखने को हथियार बन गए। 'लाठी' दिशा बोधक सहारा बिगड़ी दिमाग डगमगाती सत्ता शासन की अराजकता 'चश्मा' 'दूरदर्शिता' 'अंधे' कुव्यवस्था के आगे घुटने टेकने वाले 'चप्पल' 'आदर्श' 'पावित्र्य जीवन' 'घड़ी गतिशीलता,' चलायमान इन शब्दों के प्रयोग के द्वारा सर्वेश्वर देश की दशा पर सटीक व्यंग्य करने में सफल होते हैं। सत्ता की निरंकुशता गरीबों की असहायता की अभिव्यक्ति हेतु प्रयुक्त शब्द बिल्कुल सटीक है।

कंकड़ो में रेंग रहा है साँप
लाठियाँ मारने पर भी
वह सुरक्षित है
क्या प्रतीक्षा करूँ जब तक वह समतल भूमि पर न आ जाये।
या अपना अस्त बदल दूँ।[6]

[5] वही पृष्ठ 30 कविता 'पंचधातु'

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने साँप शब्द द्वारा कुटिल लोगो पर व्यंग्य किया गया है सर्वेश्वर इंतजार के बजाय स्थिति परिवर्तन पर जोर देते हैं और आगे बढ़कर अपने लिए अनुकूल वातावरण बनाने का समर्थन करते हैं तभी तो अस्त्र बदलनें की बात करते है अस्तित्व बचाये रखने हेतु वे अस्त्र बदलने पर जोर देते हैं अस्त्र बदलना एक विश्वास दिखाना है यहाँ समर्पण या यथास्थितिवादिता का भाव नहीं बल्कि अव्यवस्था से दो-दो हाथ करने की दृढ़ इच्छा है। 'अस्त्र' दृढ़-इच्छा का द्योतक हैं यहाँ पर 'साँप' की जगह सर्प, व्याल, आदि शब्द रख देने पर वह भख बिल्कुल नहीं आता है। जिसकी व्यंजना साँप द्वारा हो रही है। 'लाठी' आमजन का हथियार मानी जाती है। साँप आमतौर पर आम जीवन में भी लाठी से मारा जाता है लेकिन यह सामान्य दशा है। यहाँ (साँप के लिए) कुटिल लोगों के लिए परिस्थितियाँ अनुकूल ह। उपर्युक्त शब्द प्रयोग सटीक है।

कुत्ते की दुम काट दो
दुम हिलाने का भाव
नहीं जाएगा।
सभी कुत्तों की दुम काट दो
फिर भी
दुम हिलाने का भाव
नहीं जाएगा।[7]

उपर्युक्त कविता में भ्रष्टाचार की जड़ उसकी मानसिकता ओर भ्रष्टाचार हेतु मूल प्रेरक आदत पर व्यंग्य किया गया है। कुत्ता शब्द जातिवाचक संज्ञा होते है। अपने पर्यायों श्वान आदि से निकृष्ट अर्थ रखता है। कुत्ता यहाँ चाटुकारिता का बोधक है सर्वेश्वर 'कुत्ता' शब्द द्वारा उसके नकारात्मक पक्ष स्वार्थवश दुम हिलाने के भाव को लेते हैं और भारतीय व्यवस्था में व्याप्त अराजकता की बात करते है, दुम वे रास्ते वे तंत्र है। जिनसे भ्रष्चार फैलता है को समूल नष्ट करने की बात करते है। नीतियो, कानून पारित करने से सुशासन नहीं लाया जा सकता है। टुकड़खोर शब्द से भ्रष्ट नेताओं द्वारा फेकें गए पासों में उलझती भोली-भाली जनता की परवश मनोवृत्ति की बात करते हैं और यह बताते है कि जनता का दर्प जगाकर उसे लालच-मुक्त करना होगा उसकी मुक्तखोरी टुकड़ाबोरी जो उसका बहुत बुरा करवाती की मानसिकता को ही खत्म करना होगा।

कितनी ठंड है
कपोलों पर ढुलके आँसू
जम गए।
कितनी ठंड है

[6] सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, जंगल का दर्द, कविता रेंगता साँप, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड- नई दिल्ली-110002 प्रथम संस्करण-1976 पृष्ठ-34
[7] वही - पृष्ठ-46

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 12 | Sept. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.org

शब्द कंठ में ही
बर्फ हो गए।
फिर भी स्मृतियाँ
आग की तरह धधक रही है;
जैसे वर्फ में मशाल लेकर।

उक्त कविता में कवि महसूस करता है कि उसके परिवेश में एक ठंडक भर गयी है तभी तो समूचे परिवेश की शीतल चोटों ने आँख के आसुओं को कपोलों पर और शब्दों को कंठ में ही जमा दिया है। आसूँ जमनें का भाव है कि समूचे परिवेश में दुख अभिव्यक्ति भी पूर्णतया नहीं की जा सकती है। शब्द कंठ में ही वर्फ हो जाना एक भाषा वह अभिव्यक्ति 'अंधकार की' ओर संकेत करता है। व्यंजना वह है कि समूचे वातावरण में एक आद्यत ठंडक,-एक जड़ता, एक वर्फीली शांति व्याप्त है। कोई भी कंठ ऐसा नहीं है जो एक भी शब्द बोल सके। स्मृतियाँ पूर्व के सुखद दिनों की प्रतिनिधि है जो आग की तरह धधक रही हैं जैसे वर्फ में कोई मशाल लेकर जा रहा हो प्रस्तुत शब्दों द्वारा कवि ने आपातकालीन परिवेश की अभिव्यक्ति की है। अपातकाल में अभिव्यक्ति की आजादी का विशेष रूप से हनन हुआ, प्रयुक्त शब्दों से आपातकाल एवं तद्जनित परिस्थिति की अभिव्यक्ति की गई है।

लोकतंत्र को जूते की तरह
लाठी में लटकाए
भागे जा रहे है। सभी
सीना फुलाए।
हवा को उनके साथ मिलकर
गाना हो गाए
वह यह न समझे कि समय की लाश
वह इस खिड़की पर रख जाएगी
और मैं ओढ़ लूँगा
अब मैं यह खिड़की नही खोलूँगा।[8]

उपर्युक्त पंक्ति में 'जूता' शब्द 'प्रंजातंत्र की पंगुता' का प्रतीक है। जूता निकृष्टता सूचक है। लोकतंत्र को 'लाठी' 'हेयता-सूचक' कहा गया है। 'सीना-फुलाए' 'जाना' 'दंभ' का सूचक है। आजादी के बाद टूटते सपने, लोकतंत्र की वास्तविक परिणति उसकी निष्क्रियता आदि की बात मोहभंग की स्थिति आदि को व्यक्त करने हेतु जूता शब्द प्रयोग किया गया है। आमतौर पर सामान्यजीवन में भी जूते को लाठी में ही लटकाया जाता है। जूता हाथमें नहीं टांगा जाता। चारोओर व्याप्त विद्रूपता के प्रति कवि मन में आक्रोश पैदा होता है तभी वह मर्यादामर्दन सूचक वस्तु के समान बताता है।

[8] सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, यह खिड़की, संग्रह गर्म हवाएँ, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली 110002 प्रथम संस्करण-1971 पृष्ठ-15

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 12 | Sept. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.org

सुनो! अब जिया जाता नहीं
नित्य के इस स्वांग से मैं थक गया हूँ
हो सके तो बस करो;
साँस मेरी घुट रही है
कहो तो चेहरे लगाना छोड़ दूँ,
अभी कब तक चलेगा अभिनय तुम्हारा?
क्या हमारी लाश को भी
नाटक की पोशाक पहनाकर नचाओगे?[9]

प्रस्तुत काव्यांश में 'स्वांग' से अभिप्राय रूपक (नाटक) जो कवि की वेचैनी को और बढ़ाते हैं कवि सर्वेश्वर परिवेश का संघर्ष और आंतरिकता के दबाव में संयोजन करना चाहते हैं यहीं कवि अनिर्णय की स्थिति में पहुँच जाता है। यह तनाव उस स्थिति में पहुँच जाता है जब कवि जटिल युगबोध के भीतर आंतरिक-जीवन-मूल्यों की खोज करता है आत्मसाक्षात्कार करता है। कवि ऐसा छद्म जीवन जीते-जीते ऊब चुका है वह वास्तविकता की दुनिया में जीना चाहता है। 'नित्य' शब्द से अभिप्राय अनवरत-छद्म व्यवहार से है। यह व्यवस्था दीर्घकालिक है जो कवि को व्यथित करती है अभिनय शब्द से छद्म व्यवहार; जहाँ मात्र निर्देशक-निर्देशित व्यवहार होता है। सीमित अभिव्याक्ति होती है वह भी स्वमनस् न होकर पर निर्देशित है। 'सांस' 'घुटना' शब्द से अभिप्राय है जो किसी भी कीमत पर स्वीकार्य न हो तभी तो कवि इस अभिनय की दुनिया; जो बनावटी है यथार्थता नहीं है, निजात पाना चाहता है और आत्मसाक्षात्कार करता है। प्रस्तुत काव्यांश में अगर 'स्वांग' की जगह रूपक, नाटक शब्द या अवस्थानुकृति शब्द, 'नित्य' की जगह प्रतिदिन, नियमित, प्रत्येक दिन; 'लाश' की जगह मृतदेह, मृत शरीर, मृतकाया आदि तथा कथित समानार्थी शब्द भी रखे जाऐं तो वह व्यंजना कदापि नहीं हो सकती है जो प्रयुक्त शब्दों से हो रही है। अत: शब्द चयन सटीक है।

'सारा देश एक ठंडे भाड़-सा दीखता है
सूखी पत्तियों उड़ती डोलती हैं
बालू पोखरे में जल रही है।
चालीस साल पहले वह डूबकर मरी थी
अब डूब मरने के लिए चुल्लू भर पानी नहीं है'।[10]

[9] सर्वेश्वर दयाल सक्सेना कविताएँ एक काठ की घंटियाँ कविता आत्मसाक्षात्कार राजकमल प्रकाशन प्राइवेअ लिमिटेड नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली 110002 प्रथम संस्करण 1978 पृष्ठ-154
[10] सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, कुआनों नदी संग्रह: कविता 'भुजैनिया का पोखरा' राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1973 पृष्ठ-46

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 12 | Sept. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.org

उपर्युक्त पंक्तियों में प्रयुक्त शब्द 'ठंडे-भाड़ सा' राष्ट्र की दुर्दशा की व्यंजना करता है 'भाड़' शब्द प्रतीक है क्रांति का, जीवंतता का लेकिन समूचा राष्ट्र स्वाधीनता के बाद स्वार्थलोलुप भ्रष्टाचारियों के हाथों में डोल रहा है। 'सूखी पत्तियों' शब्द द्वारा और 'बालू का पोखरे में जलना' जैसे शब्दों से आजादी के सपनों को हकीकत में बदलने की निष्क्रियता, एक स्थिरता अवरूद्धता की व्यंजना की गई है। 'चुल्लू भर पानी न होना' शब्द से स्वाभिमान की लुप्तता की व्यंजना हो रही है। समूचे राष्ट्र की निष्क्रियता की अभिव्यक्ति हुई है। 'पत्तियो का उड़ना डोलना' शब्द क्रांति के उत्तेजक-कारकों की अर्थहीनता की अभिव्यक्ति करते हैं। इस प्रकार हम देखते है कि सर्वेश्वर ने उक्त पंक्तियों में मन में राष्ट्र की दशा-दिशा के प्रति क्षोभ जो बहुत गहन स्तर पर है कि अभिव्यक्ति हेतु सटीक शब्दों का प्रयोग किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना नें विवक्षा की पूर्ण अभिव्यक्ति हेतु जिन शब्दों का प्रयोग किया है वे एक मात्रता और अलम की कसौटी पर खरे उतरते हैं। सर्वेश्वर ने निःसंदेह शब्द चयन हेतु संघर्ष कर (व्यक्तिगत जीवन की तरह) वैयाक्तिक भाषा काव्यभाषा का सर्जना की है। कह सकते है कि सर्वेश्वर की कविता शब्दों की मूर्ति है सर्वेश्वर शब्दों की कूची कवितारूपी चित्र बनाने वाले एक महान चित्रकार है। उन्हे शब्द की मारक क्षमता का एहसास है तभी तो कहते है:

शब्द यदि बुलेट होते
तो वे तानाशाहों की छाती पर बैठे होते।